झारखण्ड के बिरहोर आदिम जनजाति पर सरकारी नीतियों का प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (वर्ष २000 ई० से वर्तमान तक)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय,धनबाद, झारखण्ड, भारत

के (राजनीति–विज्ञान विभाग) में

पीएच.डी. उपाधि हेतु

शोध–सार

(शोधार्थी)

अधिकरण महतो

पंजीयन संख्या :...............................

विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग (बी0बी0एम0के0यू0, धनबाद)

द्वारा समर्पित

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. प्रवीण सिंह (सह–प्राध्यापक)

विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय,धनबाद, झारखण्ड

जनवरी,२०२४

परिचय

आदिम शब्द 19वीं सदी के उत्तरार्ध में प्रचलन में आया। औपनिवेशिक काल के दौरान पश्चिमी विद्वान यह जानने में रुचि रखते थे कि मानव समाज अपनी वर्तमान स्थिति तक पहुंचने से पूर्व किन–किन चरणों से गुजरा था।[1] इस शब्द का संबंध मानव विकास के प्रारिम्भक चरण से है, जब मनुष्य अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए पूर्ण रूप से जंगलों की उपज पर निर्भर था। तथा इनकी सम्पूर्ण जीवन की गतिविधियाँ शिकार एवं संग्रहण तक सीमित थी। आज के समय में भी ऐसी कई आदिम जनजातियाँ है, जो पूरी तरह से जंगलों पर आधारित जीवन यापन करती हैं।

भारत में ऐसी 75 आदिम जनजातियाँ हैं।[2] जिनका निवास स्थान जंगलों और पहाड़ों के निकट है तथा ये आदिम जनजातियाँ विकास के कई मापदण्डों जैसेः शिक्षा, स्वास्थ्य, कुपोषण, गरीबी बेरोजगारी, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पिछड़ापन जैसे गंभीर मानकों में बहुत पीछे रह गई हैं। ऐसा ही एक आदिम समुदाय बिरहोर है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'बिर' का अर्थ जंगल और 'होर' का अर्थ आदमी होता है, अतः नाम से हीं पता चलता है कि ये जंगल के लोग है,[3] जो बिहार बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और झारखण्ड में मुख्य रूप से पायी जाती है। इनके सामाजिक–आर्थिक पिछड़ेपन की समस्या को देखते हुए केन्द्र सरकार ने वर्ष 1973 ई में ''ढेबर आयोग'' कि सिफारिश पर जनजातियों के एक उपवर्ग के रूप में आदिम जनजातियों को वर्गीकृत किया था।[4] ताकि इन पर विशेष ध्यान दिया जा सके। इन आदिम जनजातियों के विकास के लिए केन्द्र और राज्य – सरकारों द्वारा कई नीतियों लागू की गई है तथा इन नीतियों को धरातल पर उतारने के लिए विशेष धनराशि के साथ कई योजनाओ को वर्षों से लागू भी किया जा रहा है। लेकिन इसके बावजूद भी आजतक इन जनजातियों का समग्र विकास नहीं हो पाया है, तथा इन्हें आज कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस विरोधात्मक स्थिति को देखते हुए इस क्षेत्रीय शोध अध्ययन के माध्यम से झारखण्ड के निवास कर रहे बिरहोर समुदाय जिसकी जनसंख्या १०००० के आसपास है।[5] सरकारी नीतियों के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का मूल्याकंन किया जाएगा तथा इसके आधार पर इन सरकारी नीतियों की उपयोगिता और बिरहोर जनजाति की वर्तमान सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों को उजागर किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

बिरहोर जनजाति पर सरकारी नीतियों के प्रभाव के सदर्भ में निम्नलिखित साहित्य उपलब्ध है–

(1) विद्यार्थी (1977) की पुस्तक ट्राइबल कल्चर ऑफ इण्डिया में भारत में स्वदेशी समुदायों की पारंपरिक ज्ञान की समृद्धि और विविध संस्कृति पर प्रकाश डालती है।

(2) मुण्डा (2002) की पुस्तक ''आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता के सवाल'' में –आदिवासीयों की समस्याओं एवं सघर्षों के कारणों को उजागर किया गया है।

(3) शर्मा (2014) की पुस्तक ''झारखण्ड में आदिम जनजातियाँ'' में – बिरहोर जनजाति से संबंधित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संगठन के बारे में जानकारी दी गई है।

(4) कुमार एवं कांत (2017) लेख ''बरहोर के लिए विकास– योजना एवं संरक्षण का आकलन दुरू कसमार गाँव, मांडू (झारखण्ड) में ''क्लस्टर विकास मॉडल'' के बारे मे बताया गया है, कि कैसे एक ही विकास मॉडल से बिरहार जनजाति के सामाजिक–आर्थिक समस्याओं का एकीकृत समाधान किया जा सकता है।

(5) प्रमाणिक (2019) की पुस्तक ''झारखण्ड की बिरहोर जनजाति एवं विलुप्तता की समस्या'' में इस आदिम समुदाय की विलुप्तता के कारणों तथा इसके समाधान को खोजने का प्रयास किया गया है।

(6) दास एवं पाल (2019) शोध लेख ''सरकारी नीति का कार्यान्वयन और सांस्कृतिक परिवर्तन : एक केस स्टडी बिरहोर पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के अंतर्गत बागमुडी प्रखण्ड के संदर्भ में – इस लेख में पुनर्वास नीति से बिरहोर जनजाति के सांस्कृतिक जीवन में आए व्यापक परिवर्तनों को प्रकाश में लाया गया है।

(7) सहाय (2021) की पुस्तक ''आदिम बिरहोर'' : छोटानागपुर का एक लगभग अनजान जंगली कबीला'' में बिरहोर जनाजाति के ऐतिहासिक पहलुओं को उजागर किया है।

• उपर्युक्त साहित्यिक स्रोतों की समीक्षा के बाद यह पता चलता है कि अब तक झारखण्ड के बिरहोर आदिम जनजाति के इतिहास और सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक पहुलओं पर ध्यान दिया गया है, लेकिन इन पहलुओं पर सरकारी नीतियों के प्रभावों का मूल्यांकन अब तक नहीं किया गया है।

शोध समस्या

इस शोध अध्ययन के माध्यम से विभिन्न सरकारी नीतियों का जो इस आदिम समूदाय के सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पक्षों को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना है। तथा इन नीतियों से संबंधित योजनाओं के क्रियान्वयन की जॉच करनी है।

शोध का उद्देश्य

- सरकारी नीतियों के संदर्भ में बिरहोर जनजाति के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण को समझना है।
- बिरहोर जनजाति से संबंधित विशेष योजनाओं की उपयोगिता का पता लगाना है।
- सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों विशेषकर शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका के संदर्भ में बिरहोर जनजाति के सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों का पता लगाना है।
- बिरहोर जनजाति के पांरपरिक परिस्थितिक ज्ञान एवं प्रथाओं पर सरकारी नीतियों और योजनाओं के प्रभावों का मुल्यांकन करना है।

शोध प्रश्न

- वर्तमान में संचालित सरकारी योजनाओं का लाभ इस जनजाति को प्राप्त है या नहीं?

- सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में बिरहोर जनजाति को किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- साकारी नीतियों में किए गए प्रावधानों और बिरहोर जनजाति के पारम्परिक मागों में अंतर क्या है।
- बिरहोर जनजाति के परम्परागत अधिकारों पर सरकारी नीतियों ने किस हद तक हस्तक्षेप किया है।
- सरकारी नितियों के प्रभाव से बिरहोर समुदाय में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में क्या बदलाव आया है।

परिकल्पना :

- **सरकारी नीतियों का प्रभाव बिरहोर आदिम जनजाति के अनुकूल नही है।**
- बिरहोर जनजाति से संबंधित योजनाओं का क्रियान्वयन प्रभावी नहीं है।
- स्वास्थ्य नीति से संबंधित योजनाओं के क्रियान्वयन का अभाव के कारण कुपोषण की समस्या बढ़ी है।
- सामाजिक सुरक्षा से संबंधित योजनाओं का लाभ बिरहोर समूदाय को पूर्ण रूप से नहीं प्राप्त है।।
- आर्थिक विकास से संबंधित नितियों के अभाव के कारण बिरहोर जनजाति में बेरोजगारी बढ़ी है।
- पर्यावरण एवं वन नीतियों ने बिरहोर जनजाति के परंपरागत ज्ञान और अधिकारों को सीमित किया है।

अनुसंधान पद्धति

• प्रस्तावित शोध को ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषनात्मक और क्षेत्र कार्य पद्धति के द्वारा आवश्यक सूचना संकलित कर निम्न प्रविधियों द्वारा पूर्ण किया जाएगा :–

(1) प्राथमिक तथ्यों का संकलनः–

विषय से संबंधित प्राथमिक तथ्यों का संकलन निम्न उपकरणों द्वारा संपन्न किया जाएगा।

- अवलोकन विधि
- छायाचित्र (फोटोग्राफी)
- साक्षात्कार
- संरचित अनुसूची।
- समूह परिचर्चा (ग्रुप डिस्कशन)
- वैयक्तिक अध्ययन (केश स्टडी)

(2) द्वितीय तथ्यों का संकलनः—

विषय से संबंधित द्वितीय तथ्यों के संकलन हेतु निम्न माध्यमों का प्रयोग किया जाएगा।

- शोध पत्र
- विषय संबंधि पुस्तकें
- सरकारी और प्रशासनिक दस्तावेज
- अन्य माध्यम (जैसे— समाचारपत्र—पत्रिकाएं, टेलीविजन व इंटरनेट)

अनुसंधान अभिकल्प

इस शोध कार्य को गुणात्मक तथा मात्रात्मक विधियों द्वारा पूर्ण करने का प्रयास किया जाएगा जो निम्न रूप से संपादित की जाएगी।

- गुणात्मक चरण में —(1) गहन साक्षात्कार (2) फोकस समूह (3) प्रतिमाणी अवलोकन (4) दस्तावेज विश्लेषण। को शामिल किया जाएगा।

- मात्रात्मक चरण में – (1) सर्वेक्षण प्रश्नावली (2) नमूना संकलन (3) डेटा विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्ष तक पहुंचा जाएगा।

आंकडों के संग्रहण और विश्लेषण के उपकरण :–

इस शोध कार्य में निम्नलिखित रूप से डेटा/आकडों का संग्रहण तथा विश्लेषण किया जाएगा।

- आकड़ा संग्रहण के लिए –
- प्रश्नावली– सर्वेक्षण प्रतिभागियों से मात्रात्मक डेटा एकत्र करने के लिए बंद प्रश्नों के साथ संरचित प्रश्नों का निर्माण करना होगा।
- अवलोकन चेकलिस्ट– निरंतर डेटा संग्रह सुनिश्चित करते हुए प्रतिभागी अवलोकन का मार्गदर्शन के लिए चेकलिस्ट तैयार करना पड़ेगा।
- रिकॉडिंग उपकरण– प्रतिक्रियाओं को सटीक रूप से कैप्चर करने के लिए साक्षात्कार और फोकस समूहों ऑडियों एवं विडियों रिकॉर्डिग का उपयोग करना होगा।
- आकड़ों के विश्लेषण के लिए निम्न तकनीकों का उपयोग किया जाएगाः–
- सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर– परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए प्रतिगमन विश्लेषण सहित मात्रात्मक आंकड़ों के विश्लेषण के लिए एस०पी०एस०एस जैसे सांख्यिकीय सोफ्टवेयर का प्रयोग किया जाएगा।
- चार्ट और ग्राफ सॉफ्टवेयर– मात्रात्मक निष्कर्षा के दृश्य प्रतिनिधित्व के लिए चार्ट और ग्राफ बनाने के लिए माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल या विशेष डेटा विजुअलाइजेशन टूल्स जैसे सॉफ्टवेयर का उपयोग कर सकते हैं।

शोध कार्य का महत्व

- शोध कार्य बिरहोर जनजाति के वर्तमान सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने में मदद कर सकता है।

- शोध कार्य शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका और सामाजिक सुरक्षा के संदर्भ में बिरहोर जनजाति की चुनौतियों और जरूरतों की पहचान कर सकता है तथा उचित हस्तक्षेप और नीतिगत सिफारिशे सुझा सकता है।

- शोध कार्य बिरहोर जनजाति की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक ज्ञान, जैसे की चिकित्सीय जड़ी बुटी, उनकी भाषा, धर्म परिवार का दस्तावेजीकरण के माध्यम से संरक्षण किया जा सकता है।

शोध सिमाएँ और भविष्य का कार्य–

- इस शोध कार्य में आंकड़ो के इकट्ठा करने में प्रशासनिक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। तथा

- भाषायी स्तर पर जनजातियों के वास्तविक दृष्टिकोण को समझने में परेशानी हो सकती है।

• भविष्य के कार्य के संदर्भ में–

इस शोध अध्ययन के माध्यम से बिरहोर जनजाति के सामाजिक, आर्थिक विकास की जमीनी सच्चाई को समझा जा सकता है, जो विभिन्न सरकारी नीतियों और इनके क्रियान्वयन के ठोस उपायों को सुझाने में सहायक सिद्ध होगा।

. सम्भावित अध्याय

- प्रस्तावना

प्रथम : बिरहोर जनजाति की ऐतिहासिक पृष्ठीाूमि

द्वितीय : बिरहोर आदिम जनजाति के संबद्ध में : भारत सरकार की नीतियाँ

तृतीय : बिरहोर जनजाति के संबद्ध में : झारखण्ड़ सरकार की नितियाँ

चतुर्थ : बिरहोर आदिम जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर सरकारी नीतियों का प्रभाव

पंचम : बिरहोर आदिम जनजाति के राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति पर सरकारी नीतियों का प्रभाव

- निष्कर्ष

संदर्भ सूची

1. मैथ्यू, जी.एस., और कासी,ई. (2021). *कमजोर लोगों की आजीविका : छत्तीसगढ़ के बिरहोर के बीच एक नृवंश विज्ञान अध्ययन.* एशिया–पेसिफिक जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 31(1), 127–142. *https://doi.org/10.1177/10185291211007924*

2. कुमार, जे. एवं कुमार, आर. के. (2017). *दुरु कसमार गाँव, माडू झारखण्ड के बिरहोर सुमदाय के लिए विकास योजना और सुरक्षा का आकलन:* आई ओ एस आर जर्नल ऑफ हयूमेनिटीज एंड सोशल साइंस (आई ओ एस आर–जे एच एस), 5(22), 77–82 www.iosrjournals.org

3. शर्मा, बी. सी. (2014), *झारखण्ड की आदिम जनजातियां (प्रथम संस्करण)* झारखण्ड झरोखा।

4. प्रमाणिक,एस (2019). *झारखण्ड की बिरहोर जनजाति एवं उनकी विलुप्तता की समस्या. (प्रथम संस्करण)* सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, N–3/25 A।. प्रथम तल मोहन गार्डन, उत्तम नगर नई दिल्ली,

5. अहमद, जि. (1951). *बिहार के आदिवासी (प्रथम संस्करण)* नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलों रोड, दिल्ली–110007.

6. विद्यार्थी, एल. पी, एवं कुमार, बी. आर. (1977). *ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया,* साऊथ एशिया बुक्स http//ci.nii.ac/ncid/BA192922062

7. नायडू, पी. आर (1997). *भारत के आदिवासी (विकास की समस्याएँ)* राधा पब्लिकेशन (4378/4बी) अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।

8. हसनैन, एन. (2001). *जनजातीय भारत (छठा संस्करण)* जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

9. मुण्डा, आर.डी. (2002). *आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता के सवाल. (प्रथम संस्करण)* प्रकाशन संस्थान दिल्ली–110002

10. दास, एस. एवं लाल, टी, (2019). *सरकारी नीति का कार्यान्वयन और सांस्कृतिक परिवर्तनः पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के अंतर्गत बागमंडी प्रखण्ड में बिरहोर जनजाति पर एक केस स्टडी. रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी* (4), 210–275. www.rrjournals.com

11. सहाय, आर. आर (2021). *आदिम बिरहोर छोटानागपुर का एक लगभग अनजान जंगली कबीला. (प्रथम संस्करण)* क्राउन पब्लिकेशन्स।